BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

an abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed (1st Year)

Session - 2019-21

EPC-1
PROJECT
READING AND REFLECTING ON TEXTS
EXTERNAL

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Guided by -
Asst. Prof.
BINITA CHOUDHARY

Submitted by -
Name – GANGAMANI KUMARI
Roll No – 43

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **गंगामनी कुमारी** क्रमांक 43 बी0एड0 की प्रशिक्षु **ने EPC-1** परियोजना कार्य **को** व्याख्याता बिनिता चौधरी **की देखरेख में** सफलतापूर्वक सम्पन्न किया ।

इस अवधी में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सरहानिय रहा मै इनकी उज्जवल भविष्य की कामना करता/करती हुँ ।

प्रशिक्षु का नाम – **गंगामनी कुमारी**

कक्षा – बी0एड0 (प्रथम वर्ष)

क्रमांक – 43

सत्र –2019–2021

व्याख्याता का नाम

बिनिता चौधरी

व्याख्याता का हस्ताक्षर

Attested

Principal

Bharathi College of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

आभार ज्ञापन

बी0 एड0 की प्रशिक्षु होने के नाते मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे EPC-1 के "मुंशी प्रेमचंद" उपन्यास पर अध्ययन करने का मौका मिला । इस प्रोजेक्ट कार्य के दौरान मुझे इस उपन्यास से संबंधित अनेक जानकारियाँ मिली ।

इस प्रोजेक्ट कार्य को प्रस्तुत करने में हमारी शैक्षणिक सचिव " दीपाली परासर" प्रभारी प्राचार्य "श्री राकेश कुमार राय "एवं व्याख्याता "बिनीता चौधरी" ने विशेष योगदान दिया है जिसके लिए मैं आप सभी को विशेष आभार एवं विशेष हार्दिक प्रकट करती हुँ।

मै अपने माता-पिता सभी मित्रो एवं परिजनों को धन्यवाद देती हूँ । जिन्होने प्रत्यक्ष पा परोक्ष रुप से मेरे प्रोजेक्ट कार्य को करने में सहयोग प्रदान किया ।

धन्यवाद

गंगामनी कुमारी
बी0 एड0 प्रथम वर्ष
रौल न0 -43
सत्र - 2019-21

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

INDEX

S.N	QUESTION	PAGE NO.	REMARK
1.	भाषा का महत्त्व (Importance of Language)	01 – 11	
2.	पठन कौशल (Reading skills)	12 – 23	
3.	उपन्यास (मुंशी प्रेमचंद्र)	24 – 52	

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

PROJECT - 1

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भाषा का महत्त्व (Importance of Language)

शिक्षा का उद्देश्य भाषा और संस्कृति से जोड़ना है शिक्षा का क्षेत्र काफी व्यापक होती है। यहाँ विभिन्न विषयों का संगम होता है। शिक्षा का रिश्ता मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भाषाविज्ञान, के साथ-साथ दर्शनशास्त्र से भी है। संगीत और नाट्य विद्या भी शिक्षा क्षेत्र का अभिन्न हिस्सा रही है।

इस क्षेत्र में काम करने की पहली शर्त है कि हम अपने दिल और दिमाग को खुला रखते है/ विपरीत परिस्थिति में भी अच्छे समाधान खोजने और उस पर अमल करने को तत्पर हो।

इस क्षेत्र में काम करने वाले अन्य लोगों के अनुभवों

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

से लाभ उठाने और उनके साथ अपने अनुभवों को साझा करने के लिए सदैव तत्पर रो। ताकि शिक्षा क्षेत्र में बदलाव के लक्ष्य को साझा प्रयासों से हासिल किया जा सके। इस क्षेत्र में बदलाव धीमी प्रक्रिया से होता है, और उसे ठहराव पाने में लंबा समय लगता है। जाहिर है ऐसे में हमारे धैर्य की परीक्षा भी होती है तो हमें इस तरह की परीक्षाओं के लिए भी सदैव तैयार रहना चाहिए।

इस क्षेत्र में हम यह कहकर किनारा नहीं कर सकते है कि हम तो हिंदी वाले है, हम अंग्रेजी में लिखा रिसर्च पेपर पढ़कर क्या करेंगे, या फिर हम तो अंग्रेजी वाले है हिंदी में लिखा कोई अनुभव

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पढ़कर क्या करेंगे? अगर हम इस क्षेत्र में काम करते हैं तो हमें भाषा को एक संसाधन के रूप में देखना चाहिए। अगर हम भारत में प्राथमिक शिक्षा की बात करें तो भाषा का सवाल एक बहुत बड़ा सवाल है। इसमें कई सवाल शामिल हैं, जैसे बच्चों की पढ़ाई का माध्यम क्या हो, स्कूल में बच्चों को कौन-सी भाषा बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

बच्चों के घर की भाषा को स्कूल में कितना स्पेश दिया जाना चाहिए etc. ये सवाल हमारे सामने आते हैं क्योंकि स्कूलों की जमीनी वास्तविकताओं में ऐसी स्थितियाँ दिखाई देती हैं, जहाँ बच्चे के घर की भाषा अलग होती है। स्कूल की भाषा के साथ समंज्यस ऐसी स्थिति में बच्चों को तालमेल

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बैठाने के लिए जुझना पड़ता है। स्कूल में बच्चों के घर की भाषा की उपेक्षा कब तक जारी रहेगी। क्या बच्चों की घर की भाषा (Home Language) अपने पूरे सम्मान के साथ स्कूल में वापसी करेगी। या फिर बच्चे कोई खास भाषा बोलने के कारण खुद के भीतर एक हीनभावना महसूस करते रहेंगे। जो उन्हें अकी भाषा, संस्कृति और अपने लोगों के खिलाफ खड़ा कर देगी। या फिर वे स्कूल में उनको अपनी भाषा का बेझिझक इस्तेमाल करने का अवसर मिलेगा।

बिहार सरकार ने एक फैसला किया है जिसके तहत स्कूल में बच्चे उत्तर पुस्तिका में अपने घर की भाषा का इस्तेमाल कर सकते है। इस तरह से लिखने वाले किसी भी

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बच्चे के नबंर नहीं काटे जाएंगें। इस तरह का निर्णय बच्चों को अपनी भाषा के महत्त्व से रूबरू कराने और उससे जोड़ने की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण है।

मोटे तौर पर भाषा का विषय क्षेत्र संचार ही है चाहे वह किसी भी रूप में हो। आज शिक्षा के क्षेत्र में माध्यमों के रूप में केवल पुस्तकें जनरल आदि का ही उपयोग नहीं हो रहा, बल्कि इलेक्ट्रॉनिक संचार तकनीकी ने विभिन्न शैक्षिक बैक-ग्राउंड से आए हुए अधिगमकर्ता को सीखने के नए आयाम एवं नए अवसर प्रदान किए हैं। उच्च स्तरीय शैक्षिक योजनाएँ शिक्षा के क्षेत्र में काफी कारगर सिद्ध हुई हैं।

किसी भी व्यक्ति के जीवन में Language बहुत important है, भाषा का क्षेत्र बहुत

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

अधिक विस्तृत एवं व्यापक है। Language के असीमित dimensions है जो आपस में अंतर संबंधित है। विचारों तथा अनुभवों को व्यक्त करने का एक सांकेतिक साधन है। भाषा अपने भावों, भाव को प्रदर्शित करने के अनेक प्रकार है, यह शाब्दिक व अशाब्दिक दोनों प्रकार का हो सकता है या लिखित और मौखिक हो सकता है। लिखित भाषा में सूचना लिख कर दी जाती है। जिसमें निर्देश, आदेश, पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकें, जनरल, बुलेटिन, हैंडबुक्स, पोस्टर, हैडिंग, साइन बोर्ड, शिलालेख आदि आते हैं।

जबकि मौखिक भाषा में मौखिक शब्दों द्वारा पारंपरिक स्वरूप या वार्तालाप जैसे वाद-विवाद सिंपोजियम, संगोष्ठी, पैनल चर्चा, टेलीफ़ोन वार्ता वार्तालाप आदि सम्मिलित है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भाषा प्रयोग :—

पाठ में आए हुए विविध भाषा-प्रयोग विद्यार्थियों के भाषा- सीखने एवं उनकी संप्रेषण- क्षमता के विकास में सहायक हो सकते हैं। पठन- पाठन के समय इन पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रश्न-अभ्यासों में दिए गए भाषा- प्रयोगों तो बानगी मात्र हैं। हाँ उन्हें आधार के रूप में अवश्य स्वीकार किया जा सकता है। ध्यान दिया जाना चाहिए कि कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा अधिक सहज, व्यंजक प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बनती है। वाक्य के स्वभाविक क्रम को कभी- कभी बदल देने से भी अभिव्यक्ति अधिक सशक्त बन जाती है। कहानी 'बड़े भाई साहब' की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए —

तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है बार-बार नहीं लग सकती।

निश्चित ही इस प्रकार के प्रयोगों से भाषा में रवानगी आने के साथ-साथ अभिव्यक्ति सौंदर्य भी बढ़ जाता है। ऐसे प्रयोगों पर न केवल ध्यान दिया जाना चाहिए बल्कि उनके अधिकाधिक प्रयोग को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भाषा का महत्त्व एवं कार्य

(Importance and Work of Language)

मनुष्य ने ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में जो भी विकास एवं प्रगति की है उसका से भाषा को ही जाता है, इस दृष्टि से मानव जीवन में भाषा का महत्त्व सबसे अधिक है जो समाज के विकास की मूल आधारशिला है।

1) भाषा मानव विकास का मूलाधार है :-

भाषा की शक्ति के माध्यम से ही मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है वैसे तो संसार के अन्य प्राणियों के पास भी अपनी अपनी भाषाएं है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

b) भाषा मानव सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान है:-

जैसे- जैसे मानव समाज ने अपनी भाषा में प्रगति की वैसे- वैसे उनकी सभ्यता एवं संस्कृति में विकास हुआ। ज्ञान- विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हुई और श्रेष्ठ साहित्य का सृजन हुआ।

c) विचार शक्ति का विकास :—

भाषा के बिना विचारों को याद रखना असंभव है व मनन शक्ति और विचार शक्ति का विकास भी असंभव ही है।

d) ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है :—

भाषा के माध्यम से ही पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को सामाजिक विरासत के रूप में अब तक समस्त संक्षिप्त ज्ञान भावी पीढ़ी को सौंप दी है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष (conclusion) :-

भाषा मनुष्य की एक कला है। भाषा का वरदान केवल मनुष्यों को ही मिला है। भाषा एक अर्जित संपत्ति है, न कि पैतृक। भाषा के माध्यम से ही मानव अपने ज्ञान को संचित करता है। भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मानव समाज एवं संस्कृति के विचारों एवं कार्यों का संप्रेषण किया जाता है। भाषा हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

PROJECT - 2

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

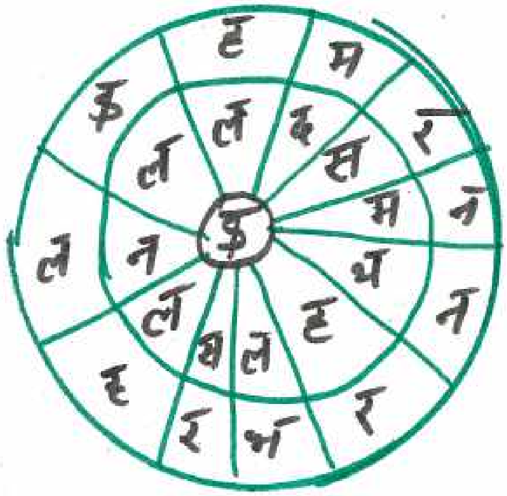

पठन कौशल

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पठन कौशल (Reading Skills)

कौशल :— अपने जीवन में और सरल एवं सहज बनाना ही जीवन कौशल है। अनुकुली तथा सकारात्मक व्यवहार की वे योग्यताएँ है जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन की माँगो और चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सक्षम बनाती है।

पठन कौशल की भूमिका

भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चारित रूप है। इसका दृष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि है। जब हम बच्चे को पढ़ाना आरंभ करते है तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क के कक्ष भाग में क्रमबद्ध होकर एक तस्वीर बनाते है, और हम उसे उच्चारित करते है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

पठन कौशल

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

यह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है, पठन कहलाती है।

पठन कौशल का अर्थ :—

किसी व्यक्ति की लिखित सामग्री को कोडिड डिकोड करने और उससे अर्थ ग्रहण करने की क्षमता को पठन कौशल कहते हैं। पठन की क्रिया में अर्थ ग्रहण करना आवश्यक होता है। अर्थ ग्रहण किस सीमा तक होता है, यह तो पठनकर्ता के ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर है।

पठन कौशल की परिभाषा :—

पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दृश्य, श्रव्यों सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केंद्र से संबंध निहित है।

डिसेन्ट के अनुसार :— " पठन लेखन द्वारा उद्दिष्ट सुलिखित / सुवर्णित प्रतीकों को किसी के अनुभव की

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

विधि से उनको संबंधित करके सार्थकता देने की प्रक्रिया है।"

पठन कौशल का महत्त्व :-

भाषा शिक्षण में प्रारंभिक स्तर पर मौखिक पठन का विशेष महत्त्व है। इससे पढ़ने में बालकों की झिझक दूर हो जाती है। छात्रों का शब्दच्चारण शुध्द होता है। पठन के समय वे शब्दों को देखते हैं जिससे उनका अक्षर विन्यास शुध्द होता है और शब्द भंडार में वृध्दि होती है। इसमें बालकों की दृश्येन्द्रियाँ, ध्वनि यंत्र एवं मस्तिष्क तीनों प्रशिक्षित होते हैं। इसके अभ्यास से बालक वाद-विवाद एवं भाषण कला में निपुण हो जाते हैं। वाचन-योग्यता के बिना मनुष्य के जीवन में कई बार बाधाएं खड़ी हो जाती हैं। निम्नांकित तथ्यों से वाचन के महत्त्व को आंका जा सकता है :-

1. वाचन शिक्षा प्राप्त में सहायक है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

2. आधुनिक युग विशिष्टताओं का युग है। व्यक्ति जिस भी व्यवसाय में है वह विशिष्ट प्राप्त करना चाहता है। नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहता है।

3. लोकतंत्रात्मक युग में वाचन का महत्त्व और भी बढ़ गया है। चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों के घोषणा प्रकाशित होते रहते है।

4. वाचन मनोरंजन का महत्त्वपूर्ण साधन है। घर में उपवन में, यात्रा में व्यक्ति कहीं भी अपनी बोरियत को दूर करने के लिए, कहानी, पत्रिका, etc. पढ़कर समय का सदुपयोग कर सकता है।

5. सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकसित होना आवश्यक है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पठन कौशल के उद्देश्य :—

1. बालकों को वाचन के माध्यम से शब्द-ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान कराया जाता है वाचन की इस कला से छात्रा मुंह व जिह्वा के उचित स्थान से ध्वनि उच्चारित करते रहेंगे।

2. वाचन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाता है।

3. वाचन से अक्षर, उच्चारण, ध्वनि, बल, निर्गम, सस्वरता आदि को सम्यक संस्कार प्राप्त होता है।

4. वाचन के द्वारा छात्रा विराम, अर्ध विराम आदि चिन्हों का प्रयोग समझ जाता है।

5. वाचन का उद्देश्य पठित अंश का भाव ग्रहण करना है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Reading Skill

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पठन कौशल के गुण :—

1. प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।

2. मधुरता, प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह - अवरोह के साथ वाचन होना चाहिए।

3. वाचन में सुंदरता के साथ प्रवाह बनाये रखना चाहिए।

4. प्रत्येक अक्षर को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारित करना।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पठन कौशल की विशेषता :—

1. बालक जन्म के बाद नये ज्ञान को दो तरीके से सीखता है – अनुभव करके तथा दूसरा अनुभवों को सुन या पढ़कर।

2. सुनने की क्रिया में श्रोता के पास अच्छा वक्ता होना चाहिए जो हमेशा सम्भव नहीं होता है।

3. दूर रहने वाले या प्राचीन विद्वानों के अनुभवों एवं विचारों का ज्ञान बालक को पढ़ने से ही हो सकता है।

4. पठन कौशल से शब्द भंडार में वृद्धि होती है।

5. सुनकर ज्ञान प्राप्त करने के अवसर बहुत सीमित है, इसलिए बालक जीवन में पुस्तकों को पढ़कर ही ज्यादा ज्ञान अर्जित करता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कहानी लेखन :-

कहानी लेखन किसी एक घटना के रोचक वर्णन को कहानी कहते है।

कहानी सुनने, पढ़ने, लिखने और बोलने की एक लंबी परंपरा हर देश में रही है, क्योंकि यह मन को रमाती है और सबके लिए मनोरंजक होती है। आज हर उम्र का व्यक्ति कहानी सुनना या पढ़ना पसंद करता है। यही कारण है कि कहानी का महत्त्व दिन व दिन बढ़ता ही जा रहा है। बालक को कहानी प्रिय होते है। कहानी लिखना एक कला है। हर कहानी लेखन अपने ढंग से कहानी लिखकर उसमें विशेषता पैदा कर देता है। वह अपनी कल्पना और वर्णन - शक्ति से कहानी के कथानक, पात्र या वातावरण को कथानक,

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पात्र या वातावरण को प्रभावशाली बना देता है।

कहानी लिखते समय हर एक बातों पर ध्यान देना चाहिए :—

1. कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंग को न अत्यंत संक्षिप्त लिखें, न अनावश्यक रूप से विस्तृत।

2. कहानी का आरंभ आकर्षक होना चाहिए ताकि पाठक का मन उसे पढ़ने में रम जाए।

3. कहानी की भाषा सरल स्वभाविक तथा प्रवाहमयी होनी चाहिए। उसमें कठिन शब्द या लम्बे वाक्य न हो।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कहानी की प्रमुख विशेषता :-

कहानी की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :-

1. पहले कहानी शिक्षा और मनोरंजन के लिए लिखी जाती थी, आज इन दोनों के स्थान पर कौतूहल जगाने में जो कहानी सक्षम हो, वही सफल समझी जाती है।

2. कौतूहल और मनोरंजन से अधिक हम कहानियों में मनुष्य की नयी संवेदनाओं की खोज करते हैं।

3. आज कहानी का मुख्य विषय मनुष्य ही है; देव या दानव नहीं। पशुओं के लिए भी कहानी में अब कोई जगह नहीं रही।

4. आज की कहानियों में भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक बल दिया जाता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

आज का मनुष्य यह जानने लगा है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है।

5. "कहानी का आधार अब घटना नहीं अनुभूति है।"

6. पहले की अपेक्षा आज की कहानी भाषा की सरलता पर अधिक बल देती है, क्योंकि उसका उद्देश्य जीवन की गाँठों को खोलना है।

7. देवी-देवताओं, दानवों और पशु-पक्षियों का समय अब समाप्त हो गया।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष (Conclusion) :—

पठन का हमारे दैनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि हम अपने भावों या विचारों को पढ़कर या बोलकर ही अभिव्यक्त करते हैं। कहानी का चयन सरल स्पष्ट रूप से कही जानी चाहिए। शिक्षक जिस कहानी को अपने छात्रों के समक्ष सुनना चाहता है। कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या एक मनोभाव को प्रदर्शित किया जाता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

PROJECT - 3

मुंशी प्रेमचंद्र

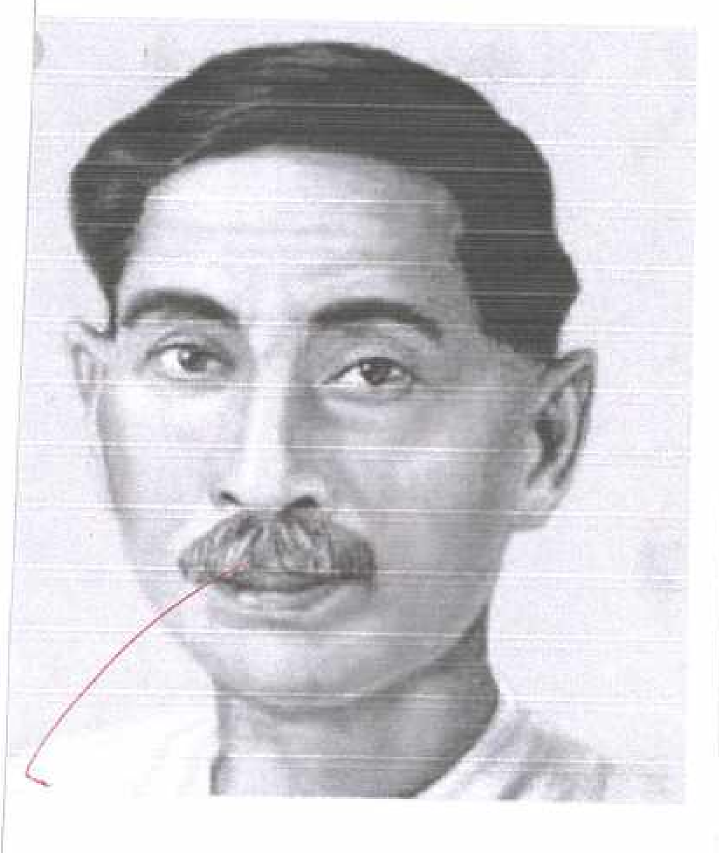

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

मुंशी प्रेमचंद्र जी का जीवन परिचय

जन्म :— प्रेमचंद्र का जन्म 31 जुलाई सन 1880 को बनारस शहर से 4 मील दूर लमही गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम 'अजायब राय' था। वह डाकखाने में नौकर के तौर पर काम करते थे।

शिक्षा :— उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवन यापन का शौक उन्हें बचपन से ही लग गया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा को पास करने के बाद वह पाठशाला में अध्यापक नियुक्त हो गए। सन 1919 में बी॰ ए॰ पास करने के बाद स्कूलों के डिप्टी सब-इंस्पेक्टर नियुक्त हो गए।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

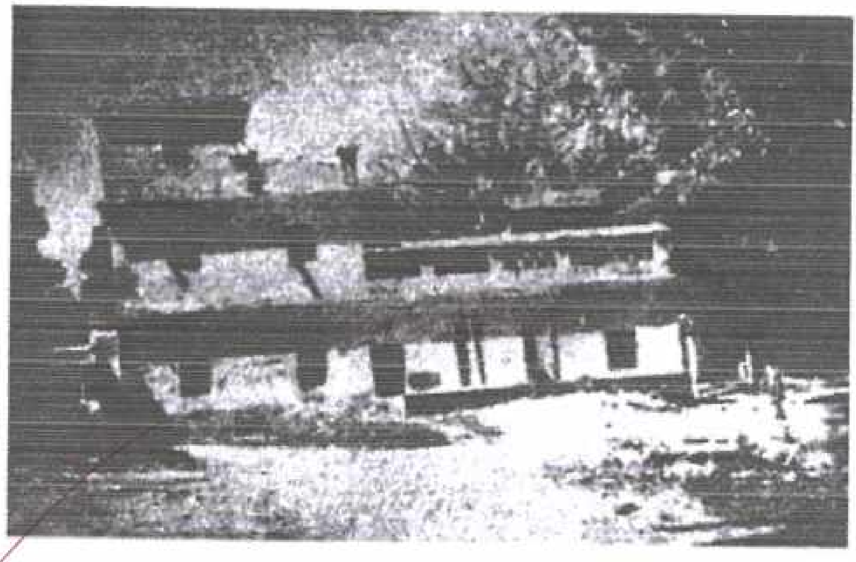

प्रेमचंद का अपना बनवाया मकान

Attested
Principal
Bharathi College of Education,
Kandri, Mandar, Ranchi

मृत्यु :- आर्थिक कष्टों तथा इलाज ठीक से न होने के कारण 8 अक्टूबर 1936 को यह दीप सदा के लिए बुझ गया जिसने हिंदी साहित्य का पथ आलोकित किया।

"तूफान आते है, कश्तियां पलट जाती है
पर कुछ लोग मर के भी अमर हो जाते है।"

प्रमुख रचनाएं :- प्रेमचंद्र जी के प्रसिद्द उपन्यास 'सेवासदन,' 'निर्मला,' 'रंगभूमि,' 'गबन,' 'गोदान' आदि है। उनकी कहानी का विशाल संग्रह आठ भागों में 'मानसरोवर' नाम से प्रकाशित है, जिसमें लगभग तीन सौ कहानियाँ संकलित है। 'कर्बला' 'संग्राम' और प्रेम की वेदी, उनके प्रमुख नाटक है। 'गोदान' हिंदी का एक श्रेष्ठ उपन्यास है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रेमचंद्र मुंशी जी का लमही का एक दृश्य

लमही का एक दृश्य

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

साहित्यिक विशेषताएँ :—

प्रेमचंद्र हिंदी के युग प्रवर्तक रचनाकर है। उनकी रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। वे सर्वप्रथम उपन्यासकार थे जिन्होंने उपन्यास साहित्य को वास्तविक भूमि पर ला खड़ा किया।

प्रेमचंद्र की रचनाओं को देश में ही नहीं विदेशों में भी आदर प्राप्त है। प्रेमचंद्र की रचनाओं का अंत-राष्ट्रीय महत्त्व है।

भाषा शैली :— प्रेमचंद्र जी उर्दू से हिंदी में आए थे, अतः उनकी भाषा में उर्दू की चुस्त लोकोक्तियों तथा मुहावरों के प्रयोग की प्रचुरता मिलती है। इनकी भाषा सहज, सरल, व्यवहारिक, प्रवाहपूर्ण, मुहावरेदार एवं प्रभावशाली है तथा उसमें व्यंजना शक्ति भी विद्यमान है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कलम का सिपाही

भूमिका :— पाँच साल के अपने परिश्रम का यह फल आपके हाथों में देते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है।

यह काम अब से बहुत पहले होना चाहिए था (जबकि उनका आँखों-देखा हाल कहनेवाले कुछ और लोग मिल जाते) और अच्छा होता अगर दूसरे किसी ने किया होता। लेकिन पता नहीं क्यों जीवनी लिखने से हमारे लोग कतराते हैं। सभी उन्नत देशों में यह विद्या बहुत आगे बढ़ी हुई है। पर हमारी भाषा इसमें बिलकुल कंगाल है। या तो हम जानते ही नहीं कि अच्छी जीवनी होती क्या है, या कुछ इस तरह की गाँठ हमारे लिखनेवालों विद्या नहीं है – या फिर भय, कोरा भय पथ, की दुर्गमता का। जो भी बात हो यह एक अटल सच्चाई है कि हमारे यहाँ जीवनियों

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

का एक सिरे से अकाल है। किताब लिखनी जब शुरु हुई तब कितनी ही बार मेरे हाथ-पैर फूल गए। मैं समझ ही नहीं पाया था कि मैं इसमें लिखूँगा क्या किताब आगे बढ़े तो कैसे बढ़े। लेकिन जब इसी पीड़ा और उद्वेग में से अचानक यह सुर मेरे हाथ लगा कि इस व्यक्ति के जीवन को उसके देश और समाज के जीवन से जोड़कर तो देखो, तब जैसे सारे बंद दरवाजे एकबक खुल गए।

इस अति सामान्य जीवन को एक नया आशय, एक नयी अर्थवत्ता मिल गयी। उसी को दिखाने का प्रयत्न मैंने किया है। सफलता मुझे मिली या नहीं मिली या कितनी मिली। इसका निर्णय तो आप करेंगे। हाँ, यह मैं जरूर कहना चाहता हूँ कि इस काम को इतनी देर से शुरु करने के पीछे जहाँ मेरी अपनी मजबुरियाँ रही है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

वहाँ यह भी एक बड़ा कारण रहा है कि मैं तभी इस काम को उठाना चाहता था जब मुझे अपने हुई यह विश्वास हो कि मैं अलग हटकर, थोड़ा निरपेक्ष होकर इस व्यक्ति को देख सकता हूं। बहुत बार लेखक की अपनी डायरियों और जर्नलों से जीवनीकार को बहुत मदद मिल जाया करती है।

प्रेमचंद्र को डायरी या जर्नल लिखने की आदत न थी। इस तरह जीवनी की सामग्री का एक बड़ा कोष एक सिरे से खत्म हो गया।

दूसरा कोष पत्रों का होता है। वह भी बहुत कुछ नष्ट हो गया, क्योंकि पत्रों को संभालकर रखने की आदत न इधर मुंशीजी को थी न उधर दूसरों को। तो भी जो कुछ चिट्ठियाँ

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भाग्यवश बची रह गयी। जिनमें सबसे बड़ा खजाना 'जमाना' के संपादक मुंशी दयानरायन निगम को लिखी हुई चिट्ठियों का है (जिसके मिलने की दिलचस्प कहानी मैंने यथास्थान लिखी है), उनका मैंने पूरा-पूरा इस्तेमाल किया है।

चिट्ठियों के अलावा, मुझे सबसे ज्यादा मदद लोगों के संस्मरणों से मिली है – संस्मरण जो पुस्तक रूप में प्रकाशित है या पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे हुए हैं या आकाशवाणी से जब तक प्रसारित किये गए। उन सब बंधुओं के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ। भाई कैलाशनाथ श्रीवास्तव के प्रति जिनकी निष्ठा और लगन से ही मुंशीजी की खोयी हुई सर्विस-बुक मिली, जिससे मुझे अपने काम में बहुत मदद मिली।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

इतना ही नहीं गोरखपुर के जूनियर ट्रेनिंग कॉलेज (प्रेमचंद्र के समय के नार्मल स्कूल) के प्रधान आचार्य की हैसियत से कैलाशनाथ जी ने प्रेमचंद्र की स्मृति को जीवित रखने के लिए बहुत कुछ किया जो सबके लिए निश्छल सेवा और लगन का एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उन्होंने मेरे संकेत पर, पुराने रजिस्टरों की मदद से प्रेमचंद्र के छात्रों को प्रश्न-तालिका भेजकर उनके बयान मँगाये। उनमें से बहुत सारे अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन जो हैं उन्होंने बड़ी मुस्तैदी से अपने बयान भेजे, जिनसे मुंशीजी के गोरखपुर-कालीन जीवन के संबंध में कुछ बड़े उपयोगी और प्रमाणित तथ्य मिले। मैं उन सबके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

श्री मुरारीलाल जी केडिया के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ जिनके निजी संग्रह रामरत्न पुस्तकालय में मुझे प्रेमचंद्र की कुछ पाण्डुलिपियाँ और इंटर बी. ए. आदि परीक्षाओं के सर्टिफिकेट देखने को मिले।

उर्दू पत्रिकाओं में खोयी हुई मुंशी जी की कहानियाँ और लेखों के संकलन में मुझे प्रोफेसर एहतेशाम हुसैन और डॉक्टर कमर रईस से जो मदद मिली उसके लिए मैं उनके प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूँ।

बंधुवर मदन गोपाल का भी मैं आभारी हूँ जिनके द्वारा संग्रहीत प्रेमचंद के पत्रों का भी मैंने इस पुस्तक में प्रयोग किया है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कहना न होगा कि मुझे अपने काम में सबसे ज्यादा मदद माता शिवरानी देवी से मिली है। उनकी पुस्तक से और उनकी संदेह उपस्थिति से, लेकिन इसके लिए मैं उनका आभार मानूं ऐसी धृष्टता मुझसे न होगी। सब कुछ तो उन्हीं का है।

हाँ, अपने गुरुदेव प्रोफेसर सतीशचंद्र देव और भाई महादेव साहा का आभार भी मुझे जरूर मानना चाहिए। उनका अंकुश न होता तो इस काम में अभी और भी शायद कुछ देर लगती। उनकी चिट्ठियाँ और बातें मुझे बराबर बहुत बल देर लगती। और भी कितने ही बंधुओं ने कितने ही रूपों में मुझको उपकृत किया है। मैं उन सबका हृदय से आभारी हूँ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

दक्षिण के एक हिंदी-प्रेमी, चंद्रहासन, प्रेमचंद्र से मिलने काशी आये। पता लगाकर शाम के वक्त उनके मकान पर पहुंचे। बाहर थोड़ी देर ठहरकर खाँ-खु करने पर भी कोई नजर न आया तो दरवाजे पर आये और झाँककर भीतर कमरे में देखा। एक आदमी, जिसका चेहरा बड़ी-बड़ी मूंछों में खोया हुआ सा था, फर्श पर बैठकर तन्मय भाव से कुछ लिख रहा था। आगंतुक ने सोचा प्रेमचंद्र जी शायद इसी आदमी को बोलकर लिखाते होंगे। आगे बढ़कर कहा- मैं प्रेमचंद से मिलना चाहता हूँ। उस आदमी ने झट-नजर उठाकर तज्जुब से आगंतुक की ओर देखा, कलम रख दिया और ठहाका लगाकर हंसते हुए कहा- खड़े-खड़े मुलाकात करेंगे क्या! बैठिए और मुलाकात कीजिए।

बस्ती के ताराशंकर 'नाशाद' मुंशीजी से मिलने लखनऊ पहुंचे। उन दिनों वह

Attested
Principal
Bharati College of Education
Kanduri, Mandar, Ranchi

अमीनद्दौला पार्क के सामने एक मकान में रहते थे। मकान के नीचे ही 'नाशद' साहब को एक आदमी मिला, धोती-बनियान पहने। 'नाशाद' ने उससे पूछा- मुंशी प्रेमचंद कहाँ रहते हैं, आप बतला सकते हैं? उस आदमी ने प्रेमचंद कहाँ रहते हैं, आप बतला सकते हैं? उस आदमी ने कहा - चलिए, मैं आपको उनसे मिला दूँ।

यह आदमी आगे-आगे चला, 'नाशाद' पीछे-पीछे। ऊपर पहुँचकर उस आदमी ने 'नाशाद' को बैठने के लिए कहा और अंदर चला गया। जरा देर बाद कुर्ता पहनकर निकला और बोला - अब आप प्रेमचंद से बात कर रहे हैं ----

पटने में एक साहित्यिक गोष्ठी है। मुंशीजी को उसका सभापति बनाया गया है आज वह पटना आनेवाला है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बहुत - से लोग उनके स्वागत को स्टेशन पर पहुंचे हुए हैं लेकिन मजे की बात यह है कि उनमें से लोग उनके स्वागत को स्टेशन पर पहुंचे हुए हैं। किसी ने उनको पहले देखा नही है बस एक तस्वीर देखी है; उसी का सहारा है।

एक्सप्रेस आयी। देख-लिया। कहीं नहीं। पंजाब मेल आयी। देख लिया। कहीं नहीं।

इतवार की शाम को बैठक थी और सबेरे छः बजे के करीब एक और एक्सप्रेस आती थी। अब बस यही आखिरी आसरा था।

ट्रेन आयी लगी और चली गयी। सैकड़ों आदमी उतरे और चढ़े पर प्रेमचंद्र नहीं आये। गोष्ठीवालों के प्राण नहों में समा गए - अब कहां जायेंगे कैसे, लोगों को मुँह दिखायेंगें।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

इस मुसाफिर को उन लोगों ने कल रात ही
पंजाब मेल से उतरते देखा था मगर पहचानते
कैसे ----

कोई विशेषता भी नहीं है उसमें।
अपने आसपास ऐसा एक भी चिन्ह वह नहीं
रखना चाहता जिससे पता चले कि वह दूसरे
साधारणजनों से जरा भी अलग है। कोई तिलक-
त्रिपुण्ड से अपने विशेषत्व की घोषणा करता है,
कोई - रेशम के कुर्ते और उत्तरीय के बीच
आँकनेवाले अपने ऐश्वर्य से कोई तिलक-अबी
साज - सज्जा के अनोखेपन से कोई अपनी किसी
खास अदा या ढ़बसे, यहाँ तक कि एक यत्न-
साधित, सतर्क सरलता भी होती है जो स्वंय
एक प्रदर्शन या अडम्बर बन जाती है, शायद
सबसे अधिक विरक्तिकर - देखो इतना बड़ा इतना
नामी आदमी होकर भी मैं कितनी सादगी से

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

• हम अभी सबक पढ़ ही रहे थे कि मालूम हुआ आज तालाब का मेला है, दोपहर से छुट्टी हो जायेगी। मौलवी साहब मेले में बुलबुल उड़ाने जायेंगे। यह खबर सुनते ही हमारी खुशी का ठिकाना न रहा।

• जो सबक ना सुना सकेगा, उसे छुट्टी न मिलेगी, नतीजा यह हुआ कि मुझे तो छुट्टी मिल गयी पर हलधर कैद कर लिये गये। और कई लड़कों ने भी सबक सुना दिये थे। वे सभी मेला देखने चल पड़े। मैं भी उनके साथ हो लिया। पैसे मेरे ही पास थे इसलिए मैंने हलधर को साथ लेने का इंतजार न किया। तय हो गया था कि वह छुट्टी पाते ही मेले में आ जायें। और दोनों साथ-साथ मेला देखें। मैंने वचन दिया था कि जब तक वह न

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

आयेंगे एक पैसा भी खर्च न करूँगा। लेकिन मालूम था कि जब तक वह न आयेंगे एक पैसा-खर्च न करूंगा।

अकेले मेला देखने में भी नहीं लगता था। यह संशय भी हो रहा था कि कहीं चोरी खुल तो नहीं गयी और चाचाजी हलधर को पकड़कर घर तो नहीं ले गये। आखिर जब शाम हो गयी तो मैंने कुछ रेवड़ियां खायी और हलधर के हिस्से के पैसे जेब मे रखकर धीरे-धीरे घर चला।

● रास्ते में ख्याल आया, मकतब होता चलू। शायद हलधर अभी वहीं हो, मगर यहाँ सन्नाय था। हाँ। एक लड़का खेलता हुआ मिला। उसने मुझे देखते ही ओर से कहकहा मारा और बोला-बच्चा, घर जाओ तो कैसी मार पड़ती है। तुम्हारे चाचा आये थे। हलधर को मारते-मारते ले गये है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

यह सब कुछ किया लेकिन ज्यों-ज्यों निकट आता दिन की धड़कन बढ़ती जाती थी। घटाएँ उमड़ी आती थी। मालूम होता था-लोग अपने-अपने काम को उछलते-कूदते चले जाते है। चिड़िया अपने घोंसलों की ओर उड़ी चली आती थी। लेकिन मैं उसी मंद गति से चला जाता था मानो पैर मैं शक्ति नहीं।

बुलाने से मौत भी नहीं आती, बीमारी का तो कहना ही क्या। कुछ न हुआ और धीरे-धीरे चलने पर भी घर सामने आ ही गया। अब क्या हो? हमारे द्वार पर इमली का एक घना वृक्ष था, मैं उसी की आड़ में छिप गया कि जरा और अंधेरे हो जाय तो चुपके से घुस जाऊं और अम्मा के कमरे में चारपाई के नीचे बैठूं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

● प्रार्थना-पत्र दिवदमत में सब भाइयों कायस्थ चित्र-गुप्तवंशी के पहुंचकर सुशोभित हो, परमात्मा रोज-रोज तरक्की देवे।

दरखास्त वास्ते सुधार करने

चाल-चलन, व्योहार जो काबिल सुधार करने के है कि जो न सुधार चाल-चलन व्योहार करने से महापातक होता है कि सब भाइयों को मालूम है और देखते है शास्त्रोक प्रमाण व वेदानुसार सब भाइयों के सामने इस पत्र द्वारा प्रकाशित करता हूँ। अपने-अपने ज्ञान दृष्टि से ध्यान देकर उनके सुधारने में दिल व जान से पुस्तैद हो जाइए।

हे मेरे प्यारे कौमी भाइयों

कायस्थ चित्रगुप्त-वंशी जरा ध्यान देकर सुनिए कि पद्म पुराण एक प्राचीन पुराण व मुस्तनिद किताब है जिससे साबित है कि बाबा

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

चित्रगुप्त पुरुष याने मूरिस आला सब भाइयों के है और जब से सृष्टि की रचना हुई बदर्बार महाराज धर्मराज के न्यायकारी व आमाल नेक व बाद जो जैसा काम करता है, तहरीर फरमाया करते हैं वो उसी के मुताबिक सजा व जजा याने स्वर्ग व नर्क तजवीज फर्माते है। -----

● उन्हीं बाबा चित्रगुप्त जी के पुराण व प्रताप व आशीर्वाद से सब उनकी औलादें कि जिनके संतान व वंश में सब भाई है वेदविद्या का पठन-पाठन करते रहे, श्रेष्ठ कहलाते रहे व वक्त महाराज क्षत्रियों के राज्य समय में कायस्थ वंश भाई अपनी वेद विद्या, व बुद्धि की लियाकत से बड़े-बड़े ओहदों पर (न्यायाधीश), व राज्य कार्य के मंत्री व दीवान मुकर्रर होते रहे और राज्य का इंतिजाम माकूल करते रहे कि सबसे श्रेष्ठ व लायक समझे जाते रहे।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

समय के उलट-फेर से कि जमाना तरक्की का हमेशा किसी का एक ही तरह पर नहीं रहता कि लोग बस अपने स्वार्थ के बंदे हैं, किसी को अपने समाज के भले-बुरे की चिंता नहीं है और है तो बस लंबी-चौड़ी बातें, कथनी कुछ और करनी कुछ –

'जाबजा शहरों व कस्बों व नामी मुकामात में कभी सभा व कमेटी व कान्फ्रेन्स वास्ते धर्म की रक्षा व कभी चाल-चलन, व्यवहार, व रीति-रिवाज के दुरुस्ती के लिए शास्त्रोक प्रमाण से मुकर्रर फरमाया है और वहाँ व्याख्या व लेकचर धर्म संबंधी दिये जाते हैं। और उस जलसा सभा में सब भाई बैठकर सुनते हैं और सत्य-सत्य कहते हैं हाँ में हाँ गला मिलाते हैं और उन व्याख्यान सुननेवाले के दिल पर असर पहुँचता है। यह तो मशहूर बात है कि

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

जब तक कोई नसीहत यानि उपदेश देनेवाला उस नसीहत व उपदेश का आमिल न होगा तब तक करनेवाला सुनने वाले के असर दिल पर नहीं पहुँचता कि अमल करें वह यह कहता है कि खुदरा फजीहत व दीगर नसीहत करते है।

- बस हे मेरे प्यारे भाइयों जब सभा विसर्जन करके श्रोता वक्ता भाई साहेबान बाहर तशरीफ लाये तो न उस व्यस्थान की सुध है न उसके ध्यान की खबर है।

- हे मेरे सजातीय भाई कायस्थ चित्रगुप्त वंशी क्या आपलोग अपने-अपने प्रत्यक्ष नेत्रों से यह देखते होंगे कि जिन कन्याओं का विवाह हो गया है और दिरागमन याने गौना नहीं हुआ पति याने शहर उनका मर गया है तो वह बाल-विधवा बेचारी नाकर्दे गुनाह अपनी-अपनी

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

जिंदगी किस किस मुसीबत से काटती है दूसरे वह कन्याएँ कि जिनका विवाह और द्विरागमन दोनों हो गया है।

- बात सिर्फ इतनी ही न थी कि वह चेतना की व्यापकतर विस्तार हो रहा था। उससे भी बड़ी बात यह थी कि वह चेतना ही बदलने लगी थी, उसके भीतर एक गुणात्मक परिवर्तन आ रहा था। उसको समझने के लिए उसकी पृष्ठभूमि को थोड़ा सा समझ लेना जरूरी है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष (conclusion) :—

प्रेमचंद्र जी ने अपनी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवन यापन का शौक उन्हें बचपन से ही लग गया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा को पास करने के बाद वह पाठशाला में अध्यापक नियुक्त हो गए। प्रेमचंद्र जी के प्रसिद्ध उपन्यास, निर्मला, रंगभूमि, गबन, गोदान आदि है। उनकी कहानी का विशाल संग्रह आठ भागों में मानसरोवर नाम से प्रकाशित है। प्रेमचंद्र जी उर्दू से हिंदी में आए थे, अतः उनकी भाषा में उर्दू की चुस्त लोकोक्तियों तथा मुहावरों का प्रयोग की प्रचुरता मिलती है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

1. लघु उत्तरीय प्रश्न :—

(क) कलम का सिपाही उपन्यास को लिखने का क्या आशय है?

(ख) कलम का सिपाही का प्रकाशन कब हुआ?

(ग) कलम का सिपाही उपन्यास से आपको किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त हुई।

(घ) उन्नत देशों में यह विद्या बहुत आगे क्यों बढ़ी?

(ड०) कलम का सिपाही किसलिए उसका नाम पड़ा।

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :—

(क) कलम का सिपाही उपन्यास की सार्थकता लिखें।

(ख) कलम का सिपाही का चरित्र-चित्रण करें।

(ग) पाँच साल परिश्रम करने के बाद उसको किस प्रकार का परिणाम प्राप्त हुआ।

(घ) मुंशी प्रेमचंद्र जी का जन्म कब हुआ?

(ड०) मुंशी प्रेमचंद्र के पिता का क्या नाम था?

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

3: Fill in the blanks :—

(क) प्रेमचंद्र जी की शिक्षा का आरंभ .... हुआ ।

(ख) सन 1919 में बी. ए. पास करने के बाद स्कूलों के .... नियुक्त हो गए ।

(ग) वह डाकखाने में .... के तौर पर काम करते थे ।

(घ) प्रेमचंद्र जी की मृत्यु .... को हुई ।

(ङ) प्रेमचंद्र जी अपने मैट्रिक की परीक्षा .... में पास किए ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi